देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के लिए गठित
क्रियान्वयन समूह के अंतर्गत

प्रबन्ध अध्ययन संस्थान
एवं
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्य़शाला
''व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में शिक्षण, आकलन, एवं मूल्यांकन शास्त्र में गुणवत्ता– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में ''

दिनांक : 7–8 मई 2022

स्थान : मुख्य सभागार, तक्षशिला परिसर
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय मध्य भारत का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है जिसने शैक्षिक प्रतिबद्धता और सेवाओं के 58वें वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह मध्य प्रदेश का पहला राज्य विश्वविद्यालय है जिसे नैक द्वारा ए+ ग्रेड से मान्यता प्राप्त है। इसकी स्थापना 1964 में मध्य प्रदेश विधानसभा द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा की गई थी। विश्वविद्यालय एक संबद्ध राज्य विश्वविद्यालय है। जिसके अधिकार क्षेत्र में इंदौर संभाग के सात आदिवासी बहुल जिले शामिल हैं। यह एक तरफ मध्य प्रदेश के औद्योगिक रूप से विकसित जिले इंदौर तो दूसरी ओर आदिवासी और ग्रामीण पिछड़े जिलो में शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। विश्वविद्यालय विविध पाठ्यक्रम संरचना, अंतर अनुशासनात्मक अनुसंधान और मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से हर साल अनेक छात्रों एवं छात्राओ को उच्च शिक्षा प्रदान करता है।

प्रबन्ध अद्ययन संस्थान

प्रबन्ध अध्ययन संस्थान 21 अगस्त 1969 को इंदौर विश्वविद्यालय के तत्वाधान में प्रबंधन की शिक्षा प्रदान करने के उ द्देश्य से स्थापित किया गया था। इसे 1974 में व्यवसाय प्रबंधन विभाग के रूप में नामित किया गया था और 1988 में इसे प्रबन्ध अध्ययन संस्थान का दर्जा दिया गया था। हाल ही में विश्व बैंक की MPHEQIP योजना के तहत संस्थान को ''उत्कृष्टता केंद्र'' का दर्जा प्रदान किया गया है। संस्थान विद्यार्थियों में वैश्विक स्तर पर नेतृत्व कर सके ऐसे गुणों को विकसित करने के उद्देश्य से प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में लगातार काम कर रहा है, जो हमेशा बदलते कारोबारी परिदृश्य में बहुत आवश्यक है। उद्योग और शिक्षा जगत की गतिशील जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम को लगातार अद्यतन किया जाता है। प्रबंधन में पीएचडी के साथ संस्थान 7 स्नातकोत्तर कार्यक्रम और 2 एकीकृत कार्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान ने एक मजबूत उद्योग–संपर्क विकसित किया है जिससे पाठ्यक्रम संशोधन, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट के संवर्धन में निरंतर समर्थन और सहयोग मिलता रहता है। संस्थान समर्पण, दृढ़ संकल्प और अनुशासन को अपनी कार्यशैली के माध्यम से विद्यार्थियों की पेशेवर आवश्यकताओं की मौजूदा जरूरतों और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए छात्रों एवं छात्राओ को उच्च शिक्षा प्रदान करता है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

"शिक्षा बचाओ आन्दोलन' को मूर्त संस्थानिक एवं सृजनात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए 24 मई 2007 को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास है। इसी ध्येय के साथ न्यास ने अपने आधारभूत विषय के रूप में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास पर कार्य आरंभ किया। तदुपरांत भारत की शिक्षा भारत की संस्कृति, प्रगति के अनुरूप हो– इस उद्देश्य के साथ कार्य विस्तार क्रमिक रूप से होते गया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक दीनानाथ बत्रा हैं जो विद्या भारती के पूर्व निदेशक हैं। न्यास अपने सहयोगी संगठनों जैसे, शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति के निकट सहयोग से काम करता है। इस न्यास का घोषित लक्ष्य वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की वैकल्पिक व्यवस्था की स्थापना करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यह संस्था शिक्षा के पाठ्यक्रम, विधि और नीति को बदलने तथा शिक्षा के 'भारतीयकरण' को आवश्यक मानती है। वर्तमान में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास कुल दस विषयों , तीन आयामों एवं तीन कार्य–विभागों के स ाथ निरंतर कार्यरत है :

विषय :

1. वैदिक गणित
2. पर्यावरण शिक्षा
3. शिक्षा में स्वायत्तता
4. प्रबंधन शिक्षा
5. इतिहास शिक्षा की भारतीय दृष्टि
6. तकनीकी शिक्षा
7. शिक्षक शिक्षा
8. प्रकल्प: प्रतियोगी परीक्षा
9. शोध प्रकल्प
10. चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास, मूल्यपरक शिक्षा।

आयाम :

1. भारतीय भाषा अभियान
2. भारतीय भाषा मंच
3. शिक्षा स्वास्थय न्यास

कार्य–विभाग :

1. प्रकाशन कार्य (शिक्षा उत्थान, शिक्षा दर्पण)
2. प्रचार–प्रसार कार्य
3. महिला कार्य

कार्यशाला के संदर्भ में

शिक्षा समाज का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा और समाज एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और अलग–अलग काम नहीं कर सकते। शिक्षा, विशेषकर उच्च शिक्षा के समुचित विकास के बिना राष्ट के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। मूल्यांकन, आकलन, और शिक्षाशास्त्र शिक्षा प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक है। कोई भी शिक्षा समग्र मूल्यांकन, आकलन, और शिक्षाशास्त्र के बिना पूर्ण नहीं मानी जाती है। शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों को ज्ञान प्रदान करना है। लेकिन ऐसा लगता है कि यह ग्रेड/रैंक/अंकों के अत्यधिक जोर में खो गया है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार किया जाए, बजाय इसके कि उन्हें बहुत सी ऐसी चीजें पता हों, जिनका वे भविष्य में उपयोग नहीं कर सकते। यह राष्टीय कार्यशाला राष्टीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में व्यावसायिक कार्यक्रमों में गुणवत्तापूर्ण आकलन, मूल्यांकन एवं शिक्षण शास्त्र शिक्षण के विकास के लिए दृष्टि दस्तावेज तैयार करने के लिए एक मंच प्रदान करेगी। कार्यशाला में प्रख्यात शिक्षाविद, उद्योग जगत के विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता आदि भाग लेंगे।

कार्यशाला के उप विषय

1. व्यावसायिक शिक्षा में आधुनिक दृष्टिकोण और चुनौतियाँ
2. अभिनव शिक्षण विधियां
3. समग्र मूल्यांकन के तरीके
4. गुणवत्ता आश्वासन

कार्यशाला की पद्धति

1. व्याख्यान
2. चर्चाएँ
3. समूह कार्य और प्रस्तुति

संरक्षक

प्रो रेनू जैन, कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

प्रमुख वक्ता

प्रो चाँद किरण सलूजा, डायरेक्टर– अकादमिक, संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन, नई दिल्ली
श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
डॉ. अर्चना ठाकुर, संयुक्त सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान, अयोग, नई दिल्ली
प्रो करुणेश सक्सेना, कुलपति, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान
प्रो.दीपक वर्मा, डॉ. भीम राव आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू

सलाहकार समिति

प्रो अशोक शर्मा, कुलाधिसचिव, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
सुश्री शोभा पैठणकर, राष्ट्रीय संयोजिका (महिला कार्य) शिक्षा संस्कृति उत्थान न्साय, नई दिल्ली
श्री ओम शर्मा, कार्यपरिषद सदस्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
प्रो दीपक श्रीवास्तव, डीन प्रबंधन, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
डॉ. अनिल शर्मा, कुलसचिव, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
डॉ. सचिन शर्मा, क्षेत्रीय निदेशक इंदौर मप्र भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. राजेश सकोरिकार, मध्य प्रान्त संयोजक, शिक्षक शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

समन्वयक

डॉ. सुनीता जोशी, कार्यपरिषद सदस्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
प्रो संगीता जैन, निदेशक, प्रबन्ध अध्ययन संस्थान, इंदौर

संयोजक

डॉ. कपिल शर्मा, प्रबन्ध अध्ययन संस्थान, इंदौर
डॉ. राजीव पंड्या, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन एवं राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षक शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्साय, नई दिल्ली

सह संयोजक

डॉ. विवेक शर्मा, प्रबन्ध अध्ययन संस्थान, इंदौर
डॉ. पियूष केन्दूरकर, प्रबन्ध अध्ययन संस्थान, इंदौर
डॉ. जसमीत कौर टंडन
डॉ. सन्देश आचार्य

आयोजन समिति

डॉ. नवीन्द्र कुमार तोतला, डॉ. मनीष कांत आर्य, डॉ. भानु प्रताप सिंह,
डॉ. निशा सिद्दीकी, डॉ. संतोष कुमार चौबे, डॉ. सी सी मोतियानी,
डॉ. शाइन डेविड, श्रीमती सोना फटिंग, डॉ. निशिकांत वाईकर,
श्री अवनीश व्यास, डॉ. अचल हार्डिया, डॉ. कविता शर्मा,
डॉ. दिव्या पुरोहित, डॉ. सुनयना लश्करी, डॉ. नीलेश पटेल

पंजीकरण शुल्क विवरण

– **शुल्क रु. 500**/– पंजीयन शुल्क RTGS या NEFT के द्वारा निम्नलिखित बैंक में जमा किया जाना है

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनिवर्सिटी कैंपस ब्रांच रबीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, इंदौर
खाताधारक का नाम : Registrar (Self Finance) IMS
खाता क्रमांक : 32113675662; IFSC Code : SBIN0030127

– पंजीकरण हेतु गूगल लिंक : https://forms.gle/sXSHEHaA8FzKkoEw9
(कृपया पंजीकरण शुल्क जमा करने के पश्चात उसकी रसीद गूगल फॉर्म लिंक पर PDF फॉर्मेट में अपलोड करें)

संपर्क विवरण

– डॉ पियूष केन्दूरकर (98930–52677)
– डॉ. सन्देश आचार्य (98264–27633)